RJPP, Vol. 15, No. 1, 2017 ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

RJPP
REVIEW JOURNAL OF
POLITICAL PHILOSOPHY
A Peer Reviewed International Journal

भारतीय कला पर महात्मा गाँधी के दर्शनिक चिन्तन का प्रभाव
(सौन्दर्यशास्त्र का दार्शनिक पक्ष)

डॉ० रीता सिंह
पी०डी०एफ० (यू०जी०सी०)
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ।

निरन्तर राजनीति में लिप्त रहने के पश्चात् भी महात्मा गाँधी जी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करते हुए भी उन्होंने दूसरी ओर अध्यात्म, सत्य व अंहिसा आदि को भी अपने जीवन में प्राथमिकता दी थी। कर्मयोगी की भांति गांधी जी ने अपना जीवन व्यतीत किया है।

गाँधी जी को अपने परिवार में वैष्णव धर्म की शिक्षा मिली थी। इन्होंने अपने बचपन में ही मनुस्मृति का एक अनुवाद पढ़ लिया था। गीता तो ये नित्य पढ़ते थे। इग्लैंड में इन्होंने बाईबिल और लाइट ऑफ एशिया पढ़ी थी और श्रीमति एनी बेसेंट का सत्संग किया था। इस सब के आधार पर इनके धार्मिक एवं दार्शनिक विचार बने। पर मूलरूप में इनका जीवन दर्शन गीता पर आधारित है। गीता को ये "गीता माता" कहते थे। गाँधी जी ने किसी नए दर्शन का निर्माण नहीं किया इन्होने भारतीय दर्शन की मूलभूत बातों को ही व्यवहारिक रूप दिया है। लेकिन यही व्यवहारिक रूप इनकी अपनी सूझ–बूझ का पारिचायक है, इसलिए उसे आज गांधी दर्शन, गांधीवाद अथवा सर्वोदय दर्शन के नाम से पुकारा जाता है।

गाँधी जी गीता को तत्व ज्ञान का सर्वोत्म ग्रंथ मानते थे। गीता के अनुसार मूल तत्व दो है–पुरुष (ईश्वर) और प्रकृति (पदार्थ) और इनमें ईश्वर श्रेष्ठ है। मनुष्य को गाँधी जी शरीर, मन और आत्मा का योग मानते थे और यह मानते थे कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मज्ञान, ईश्वर प्राप्ति और मोक्ष है। इसी को ये मुक्ति कहते थे।

गांधी जी के अनुसार संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा से होता है और यह मनुष्य के व्यवहार में प्रकट होती है। ये मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित करने अैर उसकी आत्मिक उन्नति के लिए उसके सांस्कृतिक विकास को आवश्यक समझते थे। सत्य गांधी जी के लिए साध्य एवं साधन दोनों है। साध्य रूप में सत्य वह है जिसका अस्तित्व है, जिसका कभी अंत नहीं होता अर्थात् ईश्वर। और साधन रूप में सत्य से गांधी जी का तात्पर्य सत्य विचार, सत्य आचरण सत्य वाचन से है।

जब गाँधी जी ष्डल म्गचमतपउमदजे ूपजी जतनजीष में लिखते हैं, ष्स्मज ीनदकतमके सपाम उम चमतपीए इनज समज जतनजी चतमअंपसण्ष तब वे सर्म्पण से उद्धिक्त परम आनन्द का अनुभव करते हैं। परमसत्ता के

विलास का साक्षात्कार करते हैं और इससे उनकी लौकिक भूमिका विलगित हो जाती है।[1] गाँधीवाद का भारतीय जन–जीवन एवं शासन पर अमिट प्रभाव पड़ा है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने विश्व शान्ति के लिए जिस 'पंचशील' सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था, वह गाँधीवादी चिन्तन का ही पूर्ण रूप है, और जो हमें बुद्ध और महावीर की विचार परम्परा से प्राप्त हुआ है।[2]

पाणिनी, चाणक्य, शंकराचार्य तथा गाँधी हमारे इतिहास सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। आप जानते है कि इनमें जो नैतिक सौन्दर्य है वह स्वातिशायी है, एवं आन्तरिक सौन्दर्य के अन्तर्गत आता है। वही इतिहास बन गया है।[3] प्रत्येक शास्त्र अथवा विज्ञान अपने सीमित क्षेत्र में सीमित प्रकाश और प्रसाद की सृष्टि करता है। किन्तु जीवन का चरम सत्य बुद्धि की सीमाओं के पार है। बुद्धि वस्तु के बाह्य रूप को समझने का यन्त्र मात्र है, वह सत्ता को ग्रहण नहीं कर सकती। दर्शन वस्तुतः चरम सत्य के दर्शन का नाम है। इसलिए विज्ञान और शास्त्र से भी ऊपर दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो परम सत्य और जीवन के रहस्य का उद्घाटन करता है।[4]

सौन्दर्यशास्त्र मनुष्य की उस प्रवृत्ति का अध्ययन है जो विशिष्ट वस्तुओं से अत्यन्त तीव्र रूप से प्रभावित होने की प्रवृत्ति है। वास्तविक सत्य सौन्दर्य स्वयं में अलंकार ही है। उसे बाह्य बनावट की आवश्यकता नहीं, प्रकृति मे निहित सौन्दर्य ही वास्तविक सौन्दर्य है। इस प्रकार सौन्दर्य को हम मौखिक रूप से दो रूपों में व्यक्त कर सकते हैं–आन्तरिक सौन्दर्य एवं बाह्य सौन्दर्य। आन्तरिक सौन्दर्य–जो मनुष्य की आत्मा की प्रकृति की एवं आत्मा में निहित सात्विक भार की ओर संकेत करता है। दूसरा बाह्य सौन्दर्य–जो हमें ब्राह्य उपकरणों के प्रयोग से प्राप्त होता है। आन्तरिक सौन्दर्य जहां एक ओर पवित्रता, सात्विकता का द्योतक है वहीं ब्राह्य सौन्दर्य हमें भिन्न–भिन्न ब्राह्य उपकरणों के साधारण प्रयोग, परन्तु कुशलतापूर्वक सृजन ही ब्राह्य सौन्दर्य को प्रकट करता है। ब्राह्य सौन्दर्य के लिए आभूषणों की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु वामन के अनुसार–सौन्दर्य स्वयं में ही एक अंलकार है।

सौन्दर्य एवं कला का योग सौन्दर्यशास्त्र स्वयं में संजोए हुए है। सौन्दर्य और कला के साथ अनेक प्रकार के व्यक्तियों का सम्बन्ध होता है। दार्शनिक पक्ष में सौन्दर्यशास्त्र के विवेचन के पश्चात् उसका स्वरूप व विभिन्न पहलुओं को लेकर कला तथा सौन्दर्य का वर्णन भी आवश्यक है। सौन्दर्यशास्त्र के दार्शनिक स्वरूप को विशद् निरूपण करने के पश्चात् अन्य लोगों के दृष्टिकोण का एक विहंगम परीक्षण सयुक्तिक होगा।[5]

मनुष्य स्पष्टतया तीन प्रकार से अपने सौन्दर्य बोध को प्रकट करता है–

1. बाह्य सौन्दर्य को ग्रहण करके
2. अनुकरण करके
3. सौन्दर्य सृष्टि करर्के

कला का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जिसमें कला समीक्षक ना होते हो, फिर चाहे वह काव्य कला हो, नाट्य कला हो या चित्रकला हों। कला–समीक्षा विद्यालयों में छात्र–छात्राओं को पढ़ाने के लिए ही नहीं अपितु सामान्य व्यक्तियों के लिए भी लिखी जाती है। प्रकृति और मानवता में जो सत्य और सौन्दर्य निहित है, कला उसका उद्घाटन करती है।

परम्परागत रूप से सौन्दर्यशास्त्र दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। सौन्दर्यशास्त्र सौन्दर्य एवं कला दोनों ही पहलुओं को स्वयं में संजोए हुए है। विश्व में सुन्दर वस्तुओं का जो अस्तित्व है उसी के कारण हम जो बौद्धिक चिन्तन करते हैं, वही सौन्दर्यशास्त्र है। इस बौद्धिक चिन्तन के अन्तर्गत हम वस्तुओं के स्वरूप का विचार करते हैं। उसी के साथ–साथ जो वस्तुओं के प्रति मानवीय प्रक्रियाऐं स्वयं ही अन्तर्मन में जन्म

---

1 कौशिक, विधु–सौन्दर्यशास्त्र पृष्ठ सं०–44

2 सिंह, धीरेन्द्र प्रताप व पाण्डेय प्रजेश कुमार–गाँधीवादी विचारधारा, सामान्य मानव व्यवहार एवं महिला संशक्तिकरण, पृष्ठ – 05

3 कौशिक, विधु–सौन्दर्यशास्त्र पृष्ठ – 44

4 शर्मा, डा0 हरद्वारी लाल – सौन्दर्यशास्त्र, 1999 पृष्ठ – 33

5 कौशिक, विधु–सौन्दर्यशास्त्र पृष्ठ – 25

लेती हैं उन सभी का यथासम्भव विवेचन एवं अध्ययन हम सौन्दर्यशास्त्र के अन्तर्गत करते हैं। यद्यपि विद्वान इसे सौन्दर्यशास्त्र के नाम से ही अभिग्रहित करते हैं तथापि इस शास्त्र में सौन्दर्य एवं कला दोनों का योग है। कला एवं सौन्दर्य के परस्पर सम्बन्ध को सौन्दर्यशास्त्र का प्रमुख विषय माना जाता है। गाँधी जी स्पष्ट कहते हैं कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना शान्ति एवं सौहार्दपूर्ण स्थितियों के लिए की थी। मानव ने ईश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था को चुनौती देते हुए उसके जमीन, पानी व आकाश में लकीरें खींचकर बाट दिया। फिर उन लकीरों को फैलाने तथा बचाने के लिए निरन्तर संघर्ष में उलझे रहते हैं। गाँधी जी हमारे इतिहास सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। इसमें जो नैतिक सौन्दर्य है वह सर्वातिशायी है वह आन्तरिक सौन्दर्य के अन्तर्गत आता है। गाँधी जी ने हमेशा यह बताया कि किसी भी वस्तु या सुविधा का उपयोग करना गलत नहीं, गलत है उन वस्तुओं या सुविधाओं के अधीन या अति आदत होना। यह विचार यह दर्शाता है कि उन्होंने सदैव आन्तरिक सुन्दरता को प्रधानता दी और सबको सम्मान से देखा।

इनके अनुसार अगर हम अपनी जरूरतों के मुताबिक इस्तेमाल करे तो वह पर्याप्त है पर अगर हम लालच करें तो किसी के लिए पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए सदैव जितना जरूरत हो केवल उतना ही उपयोग करें। यह उनकी सुन्दर विचार धारा को दर्शाता है। जो किसी भी अति के खिलाफ है। गाँधी जी के लिए ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर है। सत्य अंतरात्मा की आवाज है उनके अनुसार ईश्वर को पाने का एकमात्र रास्ता सत्य है। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में सत्य को अपना लेता है तो वह अवश्य ईश्वर को पा लेता है। सत्य ही निर्वाण प्राप्ति का एकमात्र रास्ता है।

गाँजी जी एक दार्शनिक और शिक्षाविद् थे। वे एक मानवतावादी विचारक थे उन्होंने जीवन के हर पक्ष पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। गाँधी जी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा मतलब है बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में जो कुछ सर्वोत्तम है, उसे बाहर निकालना"। उनके अनुसार शिक्षा मानव के व्यक्तित्व के सभी पक्षों–शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि के समरूप तथा संतुलित व्यक्तित्व के लिए है ताकि व्यक्ति सत्य को प्राप्त कर सके।

गाँधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और कहा कि इसको निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनों निष्प्राण और शून्य हो जाते हैं। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा।[6] जहाँ वे एक ओर अद्वैत को स्वीकार करते थे वही उन्होंने अनेकान्तवाद को भी स्वीकारा। गाँधी जी ने वेदों पर भी पूर्ण विश्वास किया तथा कर्म सिद्धान्त, पुर्नजन्म इत्यादि में भी उनकी पूर्ण आस्था थी। गाँधी जी ने शिक्षा से सम्बन्धित जो पाठयक्रम बनाया उसमें उन्होंने उन सभी विषयों को रखने की सलाह दी है जो बच्चों की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है। गाँधी जी ने मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, सामान्य विज्ञान के साथ–साथ बुनियादी शिल्प (उपयोगी कला), संगीत व चित्रकला को भी शिक्षा के अन्तर्गत रखा है क्योंकि शिल्प व चित्रकला बालक को आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर रहना सिखाता है। यह सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है और इसमें बच्चें में सृजनात्मकता का विकास होता है।

गाँधी जी के चिन्तन में व्यक्ति व्यवस्था का केन्द्र है। आधुनिक समय के मनोवैज्ञानिक भी इस बात से सहमत है कि "करके सीखना" शिक्षण–अधिगम की सबसे उत्तम विधि है यही सिद्धान्त गाँधी जी का है। वे हस्तकला के माध्यम से शिक्षा देने के पक्षधर थे क्योकि इससे बालक आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर रहना सीखता है बच्चे बड़े जिज्ञासु होते है, आप किसी भी विधि से शिक्षण करे, वे बीच–बीच में आपसे प्रश्न पूछते ही है, उनके प्रश्नों के उत्तर तुरन्त देने चाहिए, उनकी शंकाओं का समाधान करना चाहिए। जिससे बच्चों में सृजनात्मकता का विकास होता है।

गाँधी जी किसी नए दर्शन के प्रतिपादक नहीं है इन्होने प्राचीन भारतीय दर्शन को व्यवहारिक रूप दिया है। परन्तु इसे व्यवहारिक रूप देने में इनकी अपनी मौलिकता है। इसलिए आज उसे गाँधी दर्शन के

---

[6] सिंह, धीरेन्द्र प्रताप व पाण्डेय प्रजेश कुमार–गाँधीवादी विचारधारा, सामान्य मानव व्यवहार एवं महिला संशक्तिकरण,

ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
4.0000

रूप में माना जाता है। गाँधी जी आत्मा और परमात्मा में विश्वास करते थे और मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य इस आत्मा की मुक्ति मानते थे और इस मुक्ति के लिए ये मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता समझते थे। इनके विचार पूर्णरूपेण मनोवैज्ञानिक है। गाँधी जी ने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिए जिस एकादश व्रत के पालन की शिक्षा दी और सत्य एवं अहिंसा पर आधारित जो शिक्षा योजना प्रस्तुत की है। वह भारतीय दर्शन की पृष्ठभूमि पर ही तैयार है वह प्रत्येक दृष्टिकोण से दर्शनपर आधारित है।